संदर्भ सूचि

	लेखक	ग्रंथ	पृष्ठ क्रमांक
१	भूमिका - त्रिवेदी	यशपाल व्यक्तित्व एवं कृतित्व	१०३ ।
२	यशपाल	अमिता	९२ ।
३	वही	वही	८६ ।
४	वही	वही	८८ ।

उपसंहार

यशपाल जी का साहित्यकार व्यक्तित्व एक जनवादी व्यक्तित्व है। यशपाल जी बहुमुखी हिन्दी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ क्रांतिकारी लेखक के प्रमुख आधार स्तंभ माने जाते हैं। उन्होंने जीवन को जिस रूप में देखा जाना पहचाना है ठीक उसी तरह उसे अपने उपन्यासों के द्वारा अभिव्यक्त किया है। सन १९४१ में 'दादा कामरेड' उपन्यास के द्वारा यशपाल जी ने हिन्दी उपन्यास जगत में प्रवेश किया और सन १९७६ तक हिन्दी उपन्यास साहित्य को कुल मिलाकर ग्यारह सामाजिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक उपन्यास दिये।

प्रथम अध्याय में 'यशपाल जी का' जीवन वृत्तान्त प्रस्तुत उनके इस महान व्यक्तित्व के निर्माण में उनके माता-पिता के आदर्श और उनके संस्कार तथा जीवन-संगिनी का सहयोग महत्वपूर्ण रहा है। पिता के रिवा माता का ऋण ज्यादा दिखाई देता है। उनके जीवन का पहला पहलू क्रांतिया विद्रोह ही दिखाई देता है। सतत संघर्षशीलता, सतत अध्ययन एवं चिंतन, महान विचारक, बहुश्रुतता बहुमाषा ज्ञान, सृजन धर्मी साहित्यकार आदि तत्वों से मिलकर जो व्यक्तित्व बनना है उसी का नाम यशपाल जी हैं।

द्वितीय अध्याय में यशपाल जी एक बहुमुखी प्रतिभावाले साहित्यकार हैं। यशपाल जी हिन्दी साहित्य जगत में उपन्यासकार के नाते से प्रसिध्द हैं। उन्होंने उपन्यास के अतिरिक्त अनेक विधाओंका सृजन किया हैं। जैसे, कहानी, संस्मरण, कहानी, निबंध, नाटक, यात्रा-विवरण। यशपाल जी ने उपन्यासोंका सृजन लगन लगाकर किया है इसी वजहसे उपन्यास रोचक हो गए हैं। उनके औपन्यासिक कृतियों के अवलोकन के बाद कहा जा सकता है कि उन्होंने सामाजिक, ऐतिहासिक तथा राजनीतिक उपन्यास लिखे है। उनके उपन्यासों में प्रौढता के दर्शन होते हैं।

तृतीय अध्याय में अमिता` उपन्यास की कथावस्तु का विवेचन किया है। इस उपन्यास में लेखक ने कलिंग विजय की कथा को एक उद्देश्य के साथ प्रस्तुत किया है।` विश्व-शांती` निर्माण करना लेखकका उद्देश्य है। लेखक ने इस औपन्यासिक कृतिद्वारा यह संदेश दिया है यध्द करके अशोक विजय प्राप्त करता है, लेकिन उसे शांति नहीं मिलती। सम्राट को एक बालिका पराजित करती है। भयंकर मानव हत्या करके अशोक विजयी होता है और छोटी-सी बालिका उसे पराजित करती है। एक बडे आदमी से भी छोटे बच्चे के विचार श्रेष्ठ होते हैं।

चतुर्थ अध्याय में उपन्यासों के पात्रों का चरित्र-चित्रण किया है। इस उपन्यास के पात्र तथा चरित्र-सृष्ठी भी इसकी कथावस्तु की भाँति अत्यंत विस्तृत है। उपन्यास के अधिकांश पात्र राजदरबारसे संबध्दित है। इनमें वृध्द युवक, बौध्द भिक्षु, महासेनापती ,महारानी ,सेठ आदि सभी तरह की पात्र हैं। स्त्री पात्रों में वैविध्य है। दासीयों का चित्रण ज्यादह है। महारानी नंदा, राजमाता,अमिता,दासी हिता,हिता माँ। उपन्यास के चरित्र चित्रण अंतरंग और बहिरंग दृष्टि से सफल बने हैं।

पँचम अध्याय में ` अमिता` उपन्यास में ऐतिहासिक वातावरण निर्मिति का चित्रण सजीव रूप में किया है। इस उपन्यास में अनेक चित्र है जो देशकाल की व्यापकता को प्रस्तुत करते हैं। लेखकने संपूर्ण कथानकका आधार कलिंग विजय किया है।

लेखक ने एक ही पिढी का संघर्ष दिखाया है। करवेल के महाराज अशोक से प्रतिरोध करके अशोक को पराजित करते हैं। फिर अशोक कलिंग पर आक्रमण करता है। अशोक विजयी होता है किन्तु बालिका अमिता अपने शब्दों से उसे पराजित करती है। ऐतिहासिक उपन्यास के नाते यशपालजी ने ऐतिहासिक वातावरण की निर्मिति अच्छी तरहसे किया है। युध्द भूमिका चित्रण भी अच्छी तरह से किया है। युध्दभूमिपर युध्द के बाद जैसा वातावरण होता है वैसाही चित्रण उन्होंने शब्दोंके द्वारा उपन्यास में उधृत किया है।

षष्ठ अध्याय में उपन्यास में वर्णित भाषा शैली का विवेचन किया है। यशपाल जी ने पाण्डित्यपूर्ण तत्सम भाषा से लेकर बोलचाल तथा प्रादेशिक भाषा का प्रयोग यथावश्यक रूप में किया है। पात्रानुकूल भाषा के प्रयोग में तत्सम तद्भव शब्दोंका प्रयोग किया है।

सामान्य जनों की बातचीत और कथोपकथन में प्रयुक्त उनकी लच्छेदार भाषा और बोलचाल कीयथार्थ शैली सीधी मन में उतर जाती है।

सप्तम अध्याय में अमिता ' उपन्यास का उद्देश्य क्या है इसपर विवेचन किया है। इसमें यशपालजी ने ' विश्व-शांती ' का बिद्रा उठाया है। सभी मानव जाती को वे विश्व-शांती के संदेश के साथ-साथ बाल-बुद्धी कितनी श्रेष्ठ होती है यह दिखाने का सफल प्रयास किया है।

अनुसंधान की उपलब्धियाँ

अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे सामने जो प्रश्न थे उन प्रश्नों के उत्तर निम्न प्रकार हैं।

१) क्या `अमिता` उपन्यास सफल ऐतिहासिक उपन्यास है ?

`अमिता` उपन्यास सफल ऐतिहासिक उपन्यास है।

२) क्या `अमिता` उपन्यास का वातावरण ऐतिहासिक है ?

अमिता उपन्यास का वातावरण ऐतिहासिक है। लेखक ने ऐतिहासिक वातावरण की निर्मिति करने में बहुत सफलता पाई है।

३) `अमिता` उपन्यास का कालखण्ड कौनसा है ? और उससे कौन सा बोध होता है ?

`अमिता` उपन्यास अशोक कालीन है। यशपाल जी ने `अमिता` उपन्यास के द्वारा सारे जगत को विश्व-शांती का संदेश दिया है।

यह उपन्यास १९५६ में लिखा है। यह काल दूसरे विश्वयुध्द के बाद का काल है, दूसरे विश्वयुध्द में जो मानवहानी हो गयी थी उसे देखकर यशपाल जी को बहुत दु:ख हुआ। इसके आगे कभी भी युध्द नहीं होना चाहिए इसीलिए उन्होंने `अमिता` उपन्यास लिखा। सम्राट अशोक ने युध्द किया और बहुत मानवहानी हो गयी। इस वातावरण का यशपाल जी ने सफलतापूर्वक चित्रण `अमिता` उपन्यास में किया है। इस उपन्यास की रचना विश्व-शांती के उद्देश से की गयी है।

इस प्रकार `अमिता` उपन्यास सभी तत्वों की दृष्टि से पूर्ण सफल उपन्यास हैं।

अनुसंधान की नई दिशा -

`अमिता` उपन्यास की ऐतिहासिकता।